E- ISSN 2582-5429

SJIF Impact Factor - 5.54

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

November 2021, Special Issue 03, Vol. II

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ

For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54

November 2021 Special Issue 03 Vol. II

Sr.No	*Title of the Paper* & Author's Name	Pg.No
26	वृद्धावस्था : एक विमर्शात्मक अध्ययन - प्रो.कासनाले वर्षा	121
27	भारतीय धर्म, दर्शन और साहित्य : एक परिचय - डॉ.सत्यनारायण एच.के.	126
28	हिंदी साहित्य : सांस्कृतिक विमर्श - प्रा.डॉ.विजय एकनाथ सोनजे	129
29	समकालीन सामाजिक संदर्भ में परिवर्तित मानवीय मूल्यों की अवधारणा -माने अनिल लक्ष्मण	136
30	रमेश उपाध्याय की कहानियों में यथार्थबोध - श्री कारभारी भटू गर्दे / डॉ.योगेश जी. पाटील	139
31	"डार से बिछुड़ी" उपन्यास में स्त्री के संघर्ष - अश्वति पि. पि. कन्नूर	143
32	प्रवासी हिन्दी महाकवि हरिशंकर आदेश के महाकाव्यों की शैलीगत विवेचना- डॉ.कविश्री जायसवाल	145
33	'स्पाइडर वेब' सोशल मीडिया साइट्स का मानक रूप - डॉ. भंडारे उद्धव तुकाराम	149
34	जनसरोकार और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता - डॉ. संजय विक्रम ढोडरे	155
35	सूफी संत काव्य धारा में बाबा फरीद - फरीदा खातून	158
36	राष्ट्रीय विकास मे पत्रकारिता की भूमिका - प्रा. सुनील लक्ष्मण वळवी / डॉ. संजय विक्रम ढोडरे	160
37	सामाजिक समता आणि मानवी हक्क - डॉ. एन. एन. लांडगे	163
38	नाशिक जिल्ह्यातील आदिवासी कोकणा जमातीच्या बोलीचे आजचे स्थान: एक अभ्यास -डॉ. मधुचंद्र लक्ष्मण भुसारे	166
39	'फकिरा' कांदबरीतील प्रादेशिकतेचे स्वरूप - डॉ. के. एन. सोनवणे	173
40	आदिवासी कोळी समाज पुरुष – चित्रण - प्रो.डॉ. भैरगुंडे एस.एस	177
41	नवे आर्थिक धोरण व कृषीक्षेत्रापुढील आव्हाने - डॉ. जयश्री दिलीप भंगाळे	180
42	अमळनेरचे थोर उद्योगपती दादासाहेब आर.के.पाटील यांचे कार्य प्रा.डॉ.मनिष रघुनाथ करंजे / डॉ.सुनिल सी.अमृतकार	184

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.
November 2021 Special Issue 03 Vol. II

35

सूफी संत काव्य धारा में बाबा फरीद

फरीदा खातून
असिस्टेंट प्रोफेसर,
पंचकोट महाविद्यालय, पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

हिंदी साहित्य के इतिहास के व्यापक फलक पर भक्ति काल एक नई ऊर्जा एवं मानवीय चेतना को लेकर उभरा। इस नई चेतना ने आम जनता की निराशा को दूर करके उसमें एक नया आत्मविश्वास भर दिया। हिंदी साहित्य में भक्तिकाल से अभिप्राय उस युग से है जिसमें प्रमुखत: भागवत धर्म के प्रचार-प्रसार के फलस्वरूप भक्ति का उदय और विकास हुआ। किंतु भक्तिकाल यहीं तक सीमित नहीं था। वैष्णव धर्म के अतिरिक्त तत्कालीन अन्य धर्म भी भक्ति आंदोलन के अंग बन गए। मध्यकालीन भारतीय धर्मों में हिंदू, जैन, बौद्ध का अस्तित्व था। इस्लाम भी अपनी जड़ें जमा चुका था। भक्तिकाल इन सभी का मिला-जुला रूप है।

भक्तिकाल के निर्गुण संप्रदाय के अंतर्गत सूफी मत, इस्लाम धर्म परंपरा में एक उदार चिंतन रखने वाला मत था जहाँ इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा हजरत मुहम्मद से होती है, परंतु उनके अनुयायियों द्वारा धार्मिक असहिष्णुता फैलने लगी। फलस्वरूप इसी धार्मिक असहिष्णुता एवं कट्टरता के खिलाफ सूफी संत का प्रचलन हुआ, जो धार्मिक रूप से उदार एवं साहिष्णु विचार लेकर चला। सूफी मत का सजग विकास नवीं शताब्दी के बाद हुआ और भारत में ग्यारहवीं शताब्दी के आस-पास सूफी दरवेशों के आगमन के साथ इसका प्रभाव पड़ना आरंभ हुआ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'जायसी ग्रंथावली' की भूमिका में कहा है -

"ऐसे समय में कुछ भावुक मुसलमान 'प्रेम की पीर' की कहानियाँ लेकर साहित्य क्षेत्र में उतरे। ये कहानियाँ हिंदुओं के घरों की थीं। इनकी मधुरता और कोमलता का अनुभव करके इन कवियों ने दिखला दिया कि एक ही गुप्त तार मनुष्य मात्र के हृदय से होता हुआ गया है जिसे छूते ही मनुष्य सारे बाहरी रूप रंग के भेदों की ओर से ध्यान हटा, एकत्व का अनुभव करने लगता है।

ईशा की सातवीं-आठवीं शती में कुछ इस्लाम धर्म प्रचारक दक्षिण भारत में मालाबार के समुद्र तट एवं मेलापुर आदि में आने लगे थे। भारत में ग्यारहवीं शताब्दी के आस-पास सूफी दरवेशों के आगमन के साथ इसका प्रभाव पड़ना आरंभ हुआ। सूफीमत का आविर्भाव और विकास मूलत: इस्लाम धर्म के ही अंतर्गत हुआ। आरंभ से सूफियों की 'शरीअत' में भी निष्ठा थी, किंतु बाद में स्वतंत्र चिंतन के फलस्वरूप 'शरीअत' की उपेक्षा की जाने लगी। जुनैद तथा अलगज़ाली सूफी समन्वयवादी प्रकृति के संत थे। फरीद उन्हीं की 'बा-शरेह' सूफी थे।

बाबा फरीद का जन्म 1173 ई. के रमजान महीने में पंजाब के कोठवाल गांव में हुआ था। उनका वंशगत संबंध काबुल के बादशाह फर्रुखशाह से था। 18 वर्ष की अवस्था में वे मुलतान पहुँचे और वहीं ख्वाज़ा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के संपर्क में आए और चिश्ती सिलसिले में दीक्षा प्राप्त की। इनकी साधना मूलत: सूफियों की भाँति प्रेममार्गी थी। वह मुख्य रूप से एक साधक थे और साधना के क्षेत्र में भारतीय धर्म साधना से काफी प्रभावित थे। सूफियों के लिए प्रेम ही प्रमुख तत्व है। शिवली ने लिखा है -

"प्रेम हृदय में अग्नि के समान है, जो परमात्मा की इच्छा के सिवाय अन्य सभी इच्छाओं को जलाकर भस्मीभूत कर देता है।" (सूफीमत साधना और साहित्य, पृष्ठ - 330)

बाबा फरीद ने इश्वरीय प्रेम के महत्व को स्वीकार किया है। वे लिखते हैं –

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54
November 2021 Special Issue 03 Vol. II

"दिलहु मुहबति जिने सेई सेचिआ
जिन मनि होए मुखि होए सि काढ़े कचिआ (राग आसा श्लोक 106)

पंजाबी के सूफी कवियों के साधक को प्रेमिका तथा परमात्मा को प्रिय के रूप में मानते हैं जबकि हिंदी के सूफी कवियों ने इसके विपरीत साधक को प्रेमी और परमात्मा को प्रेमिका के रूप में चित्रित किया है। फरीद पंजाबी के प्रथम सूफी कवि हैं। इन्होंने परमात्मा को कंत अथवा सुहु तथा स्वयं को पत्नी रूप में प्रस्तुत किया है। आगे चलकर पंजाबी के प्राय: सभी सूफी कवियों ने उन्हीं की पद्धति का अनुसरण किया। यह पद्धति पूर्ण रूप से भारतीय पद्धति के अनुकूल है।

सूफी साधना में ज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है। सूफी विचारकों के अनुसार एकत्व की अनुभूति ज्ञान द्वारा ही संभव है। परमात्मा से एकमेक होने के लिए मानव क्या करे? इसका उत्तर सूफी यही देते हैं कि उसके लिए सर्वाधिक आवश्यक है प्रभु का अनुग्रह, जिसके अभाव में सारे प्रयास निरर्थक हैं। बाबा फरीद भगवदनुग्रह को ही सर्वोच्च मानते हैं।

"जा होई कृपाल ता प्रभु मिलाए''

(राम सूही 2/1)

परमात्मा प्रेम के साथ 'नाम-स्मरण' का महत्व सूफीमत एवं भक्ति में समान रूप से मान्य रहा है। सूफियों का मत है कि "यदि परमात्मा को पाना चाहते हो, तो 'नाम' का साहचर्य प्राप्त करो, नाम का जाप करो, और विश्वास रखो कि परमात्मा से एकमेव अवश्य होगा, क्योंकि परमात्मा और उसके 'नाम' में कोई भेद नहीं।" (Sufis, Mystics and yogis of India - Page-15))

फरीद ने नाम स्मरण के महत्व का बताते हुए कहा है –

"विसिरया जिन सामु ते भोई मारु धीए।

(राग आसा)

फरीद ने परमात्मा को अपना 'साहब' कहकर संबोधित किया है और उसकी 'चाकरी' (सेवा) मन के सभी भ्रम (शंका) को त्यागकर करने की इच्छा प्रकट की है --

"फरीद साहब दी कर चाकरी
दिल दी लाहि भराँदा।"

(श्लोक - 71)

इस प्रकार हम देखते हैं कि सूफीमत साधना की प्रेम साधना और भारतीय भक्ति परंपरा में पर्याप्त समानता है और फरीद में भक्ति के प्राय: सभी तत्व विद्यमान हैं। फरीद ने धर्म को जीवन के प्रत्येक व्यवहार में प्रतिष्ठित करने पर बल दिया। उन्होंने मनुष्य को धर्म का वास्तविक अर्थ समझाया। हिंदी और पंजाबी के परवर्ती सूफी कवियों ने इस प्रवृत्ति को और आगे बढ़ाया। इनमें ईश्वरीय प्रेम के साथ ही साथ मानवीय प्रेम की सुगंध बसी है।

संदर्भ ग्रंथ

1. शुक्ल रामचंद्र –'जायसी ग्रंथावली', नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
2. सक्सेना द्वारिका प्रसाद – 'हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि', अग्रवाल पब्लिकेशन
3. युग-पुरुष बाबा शेख फरीद -- संपादक - डॉ. निर्मल कौशिक

■ ■ ■